

## रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन

रंजय कुमार पटेल\*

यह अध्ययन रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का एक अध्ययन है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस बात का पता लगाना था कि रचनावादी उपागम के प्रति संस्कृत विषय के विद्यार्थी किस प्रकार की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करते हैं? प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोध विधि के रूप में प्रयोगात्मक अभिकल्प को अपनाया गया। न्यादर्श इकाई के रूप में वाराणसी जनपद (उत्तर प्रदेश) के सरकारी विद्यालय किसान इंटर कॉलेज मिर्जामुराद के कक्षा 9 के संस्कृत भाषा के एक वर्ग के सभी (कुल 43) विद्यार्थियों को चयनित किया गया। न्यादर्शन विधि के रूप में उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि को अपनाया गया। अध्ययन की प्रक्रिया के रूप में प्रयोगात्मक समूह के साथ रचनावादी उपागम पर आधारित कुल छह संस्कृत पाठ योजनाओं का शिक्षण कार्य किया गया। यह कार्य 12 कार्य दिवसों तक किया गया। तत्पश्चात् उनकी प्रतिक्रिया को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत तथा विचरणशीलता गुणांक का उपयोग किया गया। शोध निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत भाषा के विद्यार्थी रचनावादी उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त करते हैं।

मानव प्रकृति सदा से ही जिज्ञासु रही है। यही प्रवृत्ति मनुष्य को सदैव कुछ करने, कुछ सीखने, कुछ जानने एवं कुछ कर गुजरने की ओर अभिप्रेरित करती है। इसी कारण वह प्रायः क्या? क्यों? और कैसे? आदि प्रश्नों से सदैव उलझा रहता है। इसके साथ ही वह क्या था? क्या है? और क्या होगा? जैसे प्रश्नों के उत्तर की ओर भी निरंतर उन्मुख रहा है। उसकी यही प्रवृत्ति अनुसंधान को जन्म देती है। अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र में अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर खोजना, वर्तमान समस्याओं

के समाधान खोजना, विरोधी सिद्धांतों की सत्यता को परखना, नवीन प्रवृत्तियों एवं तथ्यों की खोज करना, जीवन एवं उसके परिवेश से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना आदि होता है। मानव की इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप ज्ञान की धारा प्रवाहित हुई तथा सदियों से उसका यही क्रम चलता आ रहा है। जॉन डीवी की शिक्षा के संदर्भ में एक प्रसिद्ध उक्ति है कि, 'शिक्षा अनुभवों की पुनर्रचना है।' स्केट्स शोधकर्ताओं के बारे में यह राय व्यक्त करते हैं कि जिस प्रकार योग्य चिकित्सक को औषधि के क्षेत्र

\*शोधार्थी, शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, बिहार (845401)

में हुए नवीनतम अन्वेषणों के साथ चलना चाहिए, उसी प्रकार शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी तथा शोधकर्ता को शैक्षिक सूचनाओं के साधनों और उपयोगों तथा उनके स्थापन से परिचित होना चाहिए। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला ने शोध के क्षेत्र को निर्धारित करते हुए यह संस्तुति की है कि, 'शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विद्यात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें। अनुसंधान की विषय-वस्तु गहन मानवीय महत्व की होनी चाहिए। शोध मुख्यतः उन क्षेत्रों में होना चाहिए जिनमें प्रख्यात विद्वानों को आकर्षित किया जा सके।

रचनावाद को 'शिक्षा का नया दर्शन' के रूप में मान्यता प्राप्त है। जोन्स एवं ब्रदर अराजे (2002) के 'द इम्पैक्ट ऑफ़ कन्स्ट्रक्टिविज़्म ऑन एजुकेशन—लैंग्वेज, डिस्कोर्स एंड मीनिंग' अध्ययन से यह पता चलता है कि व्यावहारवादी विचारधारा के पश्चात् रचनावाद का शिक्षा के क्षेत्र में आगमन हुआ। रचनावाद ने अधिगम की दृष्टि से शिक्षा को पुनः तरोताजा किया है। रचनावादी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में सक्रिय अधिगमकर्ता होता है। इसमें निर्देश के दौरान सामाजिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व मान्यताओं पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दिया जाता है तथा ज्ञान और कौशल जो कुछ भी उसका पूर्व ज्ञान है, उस पर विश्वास किया जाता है। अन्ततोगत्वा इन्होंने यह बताया कि रचनावाद शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। अक्कू, कड़ाईफकी, अतासोय एवं गेबन (2003) के 'इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ इंस्ट्रक्शन बेस्ड कन्स्ट्रक्टिविस्ट अप्रोच ऑन अंडरस्टैंडिंग केमिकल इक्विलिब्रियम कॉन्सेप्ट्स' अध्ययन से यह पता चलता है कि पारंपरिक निर्देश की तुलना में रचनावादी उपागम आधारित निर्देश अत्यधिक प्रभावशाली

हैं। बुरोबेस (2003) के 'ए स्टूडेंट सेंटर्ड अप्रोच टू टीचिंग जनरल बायोलॉजी दैट रीयली वर्ड्स—लॉर्ड्स कन्स्ट्रक्टिविस्ट मॉडल पुट टू ए टेस्ट' अध्ययन से यह पता चलता है कि रचनावादी शिक्षण सक्रिय अधिगम परिवेश में अकादमिक उपलब्धि को बढ़ावा देने में, वैचारिक समझ को बढ़ाने में, उच्च स्तर का चिंतन कौशल विकसित करने में और जीव विज्ञान विषय में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने में पारंपरिक निर्देश की तुलना में अधिक प्रभावी है। कॉफ़मैन (2004) के 'कन्स्ट्रक्टिविस्ट इशूज़ इन लैंग्वेज लर्निंग एण्ड टीचिंग' अध्ययन से यह पता चलता है कि हाल ही के वर्षों में रचनावाद शिक्षा में एक प्रमुख प्रतिमान के रूप में उभरा है। यह भाषा शिक्षक शिक्षा में आगामी शिक्षण के लिए रचनावादी दृष्टिकोण का विकास करेगा तथा भाषा और अंतःविषय कक्षा आधारित शोध के लिए नए रास्ते खोलेगा।

कैन (2009) के 'लर्निंग एण्ड टीचिंग लैंग्वेज ऑनलाइन—ए कन्स्ट्रक्टिविस्ट अप्रोच' अध्ययन से यह पता चलता है कि पारंपरिक तरीके से भाषा अधिगम, शिक्षण विधियों, उपकरणों, अनुप्रयोगों तथा पाठ्यक्रमों आदि पर पुनर्विचार एवं संशोधन की आवश्यकता है। इसे विभिन्न प्रकार के चैनलों एवं शिक्षण सामग्रियों के अनुप्रयोग से संशोधित किया जा सकता है। इसी संदर्भ में रचनावाद अपनी धारणाओं के साथ सीखने के दृष्टिकोण का विकास कर रहा है। यह संवादात्मक कौशल के साथ ही साथ स्वायत्तता एवं सामाजिक कौशल को भी प्रोत्साहित करता है। अब्दुल्हय (2015) के 'पैनोरमा ऑफ़ कन्स्ट्रक्टिविज़्म इन लैंग्वेज एजुकेशन' अध्ययन से यह पता चलता है कि रचनावाद सामाजिक वातावरण में ज्ञान के निर्माण

के लिए व्यक्तिगत रूप से आधार प्रदान करता है। यह अवधारणाओं के गठन के लिए व्यक्तिगत रूप से स्वतंत्रता की अनुमति देता है। यह एक अनूठी रचना के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान में रखता है। रचनावादी शिक्षण में शिक्षकों को शिक्षार्थी के प्रति संज्ञानात्मक प्रतिक्रियाओं पर विचार करना चाहिए। नॉमनियन (2018) के 'कन्स्ट्रक्टिविज्म— थिअरी एण्ड इट्स एप्लीकेशन टू लैंग्वेज टीचिंग' अध्ययन से यह पता चलता है कि थाईलैंड के शोधकर्ता और प्रशिक्षक रचनावादी तकनीक से जुड़े रहे हैं। इसके साथ ही वे कम्प्यूटर आधारित अधिगम वातावरण का समर्थन रचनावाद के लिए कर रहे हैं। थाईलैंड की शिक्षा के लिए रचनावाद को एक नई रोशनी के रूप में समर्थन प्राप्त हो रहा है। पूनम (2018) के 'इफ़ेक्ट ऑफ़ कन्स्ट्रक्टिविस्ट इंस्ट्रक्शनल मॉडल ऑन अचीवमेंट एण्ड रिटेंशन ऑफ़ हाईस्कूल स्टूडेंट्स इन इंग्लिश' अध्ययन से यह पता चलता है कि 95 प्रतिशत प्रयोज्यों ने यह स्वीकार किया कि रचनावादी निर्देशात्मक प्रतिमान रुचिकर, आनंददायक एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला है। इसी के साथ 90 प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि यह प्रतिमान पूर्व ज्ञान पर आधारित था जो समूह संवाद की दृष्टि से काफ़ी मददगार सिद्ध होता है। इसी के साथ 100 प्रतिशत विद्यालयी शिक्षकों ने यह स्वीकार किया कि रचनावादी निर्देशात्मक प्रतिमान विषय वस्तु की समझ की दृष्टि से प्रभावशाली है।

### शोध प्रश्न

माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थी रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करते हैं?

### शोध उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

### शोध परिकल्पना

माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थी रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं।

### जनसंख्या

इस शोध में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद्, प्रयागराज द्वारा संचालित राज्य के सभी विद्यालयों के कक्षा 9 के संस्कृत भाषा के सभी विद्यार्थी जनसंख्या के रूप में सम्मिलित हैं।

### न्यादर्श

न्यादर्श इकाई के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के वाराणसी जनपद के सरकारी विद्यालय किसान इण्टर कॉलेज, मिर्ज़ापुरा के कक्षा 9 के संस्कृत भाषा के एक वर्ग के सभी (कुल 43) विद्यार्थियों को प्रयोगात्मक समूह के रूप में चयनित किया गया है।

### प्रतिचयन विधि

प्रस्तुत शोध में 'उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रविधि' के द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

### शोध उपकरण

शोध उपकरण के रूप में अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वनिर्मित 'रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी' का प्रयोग किया गया है।

### शोध की प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वप्रथम माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा के

शिक्षण के लिए रचनावादी प्रतिमान पर आधारित पाठ योजनाओं का निर्माण किया गया। संस्कृत पाठ योजनाओं के निर्माण के लिए शोधार्थी द्वारा माध्यमिक शिक्षा परिषद् प्रयागराज (इलाहाबाद) द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए निर्धारित कक्षा 9 की संस्कृत विषय की पाठ्यचर्या को आधार बनाया गया। शोधकर्ता द्वारा सर्वप्रथम संस्कृत पाठ योजनाओं के निर्माण हेतु उपलब्ध सामग्री कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विभिन्न सम्प्रत्ययों का गहराई से अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त रोजर बायकी के 5E रचनावादी प्रतिमान, जिसके अंतर्गत इंगेज (जोड़ना या व्यस्त करना), एक्सप्लोर (खोज करना), एक्सप्लैन (व्याख्या करना), इलैबोरेट (विस्तार करना) तथा इवैल्युएट (मूल्यांकन करना) शामिल है, का भी अत्यंत गहराई के साथ अध्ययन किया गया। इसी के साथ रचनावाद से संबंधित विषय विशेषज्ञों तथा संस्कृत भाषा से संबंधित विषय विशेषज्ञों के उचित तथा मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन के आलोक में प्रस्तुत शोध कार्य हेतु माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा के शिक्षण के लिए रचनावादी प्रतिमान पर आधारित कुल छह पाठ योजनाओं का निर्माण किया गया। पाठ योजना संख्या एक ‘अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि’ (गद्य), द्वितीय ‘आदिकविः वाल्मीकिः’ (गद्य), तृतीय ‘पुण्यसलिला गंगा’ (गद्य), चतुर्थ ‘सुभाषितानि’ (पद्य), पञ्चम ‘नारी-महिमा’ (पद्य) तथा षष्ठ

‘नीति-नवनीतम्’ (पद्य) नामक प्रकरण से क्रमशः संबंधित हैं। इस प्रकार संस्कृत गद्य तथा संस्कृत पद्य से संबंधित कुल तीन-तीन प्रकरणों पर आधारित पाठ योजनाओं का निर्माण किया गया है। प्रत्येक पाठ योजना के अध्ययन-अध्यापन तथा समस्त गतिविधियों की संपन्नता के लिए कुल दो-दो कालांश का कालखण्ड सुनिश्चित किया गया। प्रत्येक अन्विति से संबंधित समस्त क्रियाओं के लिए कुल 45 मिनट का समय निर्धारित किया गया। इस प्रकार प्रयोगात्मक समूह के साथ रचनावादी उपागम पर आधारित कुल छह पाठ योजनाओं का शिक्षण कार्य 12 कार्य दिवसों तक किया गया। तत्पश्चात् रचनावादी उपागम के प्रति समूह की प्रतिक्रिया को जानने के लिए संबंधित प्रतिक्रिया मापनी का प्रशासन किया गया तथा प्रदत्त संकलित किए गए।

### रचनावादी उपागम के प्रति प्रतिक्रिया मापनी एवं प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध में रचनावादी उपागम के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को जानने के लिए ‘स्वनिर्मित रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी’ का प्रयोग किया गया है। प्रतिक्रिया मापनी में कुल 15 कथन दिए गए हैं, जिसमें सात सकारात्मक कथन तथा आठ नकारात्मक कथन सम्मिलित किए गए हैं। प्रत्येक कथन के प्रत्युत्तर के लिए कुल पाँच बिंदु निर्धारित किए गए हैं, जिसके प्राप्तांकों का प्रसार 15-75 निर्धारित किया गया है।

#### तालिका 1

##### रचनावादी उपागम के प्रति प्रतिक्रिया मापनी

| कथन का प्रकार | कथन की कुल संख्या | कथन संख्या                   |
|---------------|-------------------|------------------------------|
| सकारात्मक     | 7                 | 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7          |
| नकारात्मक     | 8                 | 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15 |

## प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन' करना था। इसके लिए प्रयोगात्मक समूह के कुल 43 विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। स्वनिर्मित रचनावादी उपागम प्रतिक्रिया मापनी की सहायता से एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन, प्रतिशत तथा विचरणशीलता गुणांक (Coefficient of Variation) सांख्यिकी प्रविधियों का उपयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त परिणामों को तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी की सहायता से प्राप्त प्रदत्तों का माध्य 4.05 तथा मानक विचलन 0.2104 है। माध्य का अवलोकन करने पर

स्पष्ट होता है कि कक्षा 9 के विद्यार्थी रचनावादी उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं। इसके साथ-साथ विचरणशीलता गुणांक का मान 5.20 प्रतिशत है, जो तुलनात्मक रूप से कम है। अतः दिशात्मक परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत भाषा के विद्यार्थी रचनावादी उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं' स्वीकृत होती है। अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थी रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त करते हैं।

प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों ने रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी पर प्रतिशत के आधार पर किस प्रकार का प्रदर्शन किया है? इस तथ्य की जाँच करने के लिए उनकी प्रतिक्रियाओं का प्रश्नवार सांख्यिकी विश्लेषण किया गया। इसका विवरण तालिका 3 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 2

विद्यार्थियों की रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति प्रतिक्रियाओं के मध्यमान, मानक विचलन और विचरणशीलता गुणांक

| संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | विचरणशीलता |
|--------|---------|------------|------------|
| 43     | 4.05    | 0.2104     | 5.20 %     |

तालिका 3

प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों की रचनावादी उपागम प्रतिक्रिया मापनी पर की गई प्रतिक्रियाओं का प्रश्नवार सांख्यिकी विश्लेषण

|    | कथन                                                                            | आपकी प्रतिक्रिया |           |          |         |               |
|----|--------------------------------------------------------------------------------|------------------|-----------|----------|---------|---------------|
|    |                                                                                | पूर्णतः सहमत     | सहमत      | अनिश्चित | असहमत   | पूर्णतः असहमत |
| 1. | इस शिक्षण उपागम में 'बाल केंद्रितता' को ध्यान में रखा गया।                     | 28 (65 %)        | 7 (16 %)  | 4 (9 %)  | 2 (5 %) | 2 (5 %)       |
| 2. | इस शिक्षण उपागम के द्वारा 'अधिकतम अधिगम' के लिए वास्तविक आधार प्रदान किया गया। | 14 (33 %)        | 16 (37 %) | 7 (16 %) | 4 (9 %) | 2 (5 %)       |

|     |                                                                                                                          |           |           |           |           |           |
|-----|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 3.  | इस उपागम में आपके अनुभवों, जिज्ञासाओं और सक्रिय सहभागिता को ध्यान में रखा गया।                                           | 21 (49 %) | 9 (21 %)  | 9 (21 %)  | 1 (2 %)   | 3 (7 %)   |
| 4.  | यह शिक्षण विधि वास्तविक जीवन से जोड़ती है।                                                                               | 17 (40 %) | 11 (26 %) | 10 (22 %) | 2 (5 %)   | 3 (7 %)   |
| 5.  | रचनावादी शिक्षण उपागम के दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियों, क्रियाओं एवं युक्तियों को अभिन्न अंग के रूप में अपनाया गया। | 20 (47 %) | 7 (16 %)  | 14 (33 %) | 1 (2 %)   | 1 (2 %)   |
| 6.  | इस उपागम में शिक्षक या शोधार्थी की भूमिका चुनौतियों से युक्त वातावरण के निर्माणकर्ता के रूप में देखी जा सकती है।         | 19 (44 %) | 12 (28 %) | 11 (26 %) | 0 (0 %)   | 1 (2 %)   |
| 7.  | आपके अपने व्यक्तिगत विचारों एवं कौशलों के प्रयोग या अभिव्यक्ति हेतु उचित अवसर प्रदान किया गया।                           | 25 (58 %) | 6 (14 %)  | 11 (26 %) | 0 (0 %)   | 1 (2 %)   |
| 8.  | यह शिक्षण सिद्धांत अनावश्यक, अस्थायी, उद्देश्यरहित और पाठ्यचर्या से भिन्न ज्ञान का निर्माण करती है।                      | 3 (7 %)   | 2 (5 %)   | 16 (37 %) | 16 (37 %) | 6 (14 %)  |
| 9.  | इस शिक्षण विधि में आपको दण्डात्मक या दमनात्मक अनुशासन की झलक देखने को मिलती है।                                          | 3 (7 %)   | 3 (7 %)   | 2 (5 %)   | 24 (56 %) | 11 (25 %) |
| 10. | ज्ञान के निर्माण की इस प्रक्रिया में आपको मुक्त वातावरण प्रदान नहीं किया गया।                                            | 1 (2 %)   | 2 (5 %)   | 2 (5 %)   | 17 (39 %) | 21 (49 %) |
| 11. | इस शिक्षण उपागम को विद्यालयी शिक्षण में नहीं अपनाया जाना चाहिए।                                                          | 0 (0 %)   | 0 (0 %)   | 14 (33 %) | 16 (37 %) | 13 (30 %) |
| 12. | यह शिक्षण व्यवस्था सार्थक शिक्षा का आनंदमयी सिद्धांत नहीं है।                                                            | 0 (0 %)   | 2 (5 %)   | 5 (11 %)  | 24 (56 %) | 12 (28 %) |
| 13. | इसमें व्यक्तिगत शिक्षा या निर्देशन के लिए ध्यान नहीं दिया गया।                                                           | 0 (0 %)   | 1 (2 %)   | 6 (14 %)  | 23 (54 %) | 13 (30 %) |
| 14. | यह प्रक्रिया शिक्षा के बोझ को कम नहीं करती है।                                                                           | 0 (0 %)   | 1 (3 %)   | 4 (9 %)   | 22 (51 %) | 16 (37 %) |
| 15. | इस उपागम में शिक्षक या शोधार्थी की भूमिका 'संसाधन प्रदाता' के रूप में नहीं है।                                           | 0 (0 %)   | 2 (5 %)   | 4 (9 %)   | 22 (51 %) | 15 (35 %) |

तालिका 3 में दिए गए आँकड़ों के विश्लेषणात्मक अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का स्वरूप भिन्न-भिन्न है। लेकिन उनका रुझान सकारात्मक प्रतीत होता है। रचनावादी उपागम के प्रति 'पूर्णतः असहमत' विद्यार्थियों की संख्या एवं प्रतिशत अपेक्षाकृत काफी कम है।

### शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन' करना था। इसके लिए प्रयोगात्मक समूह के कुल 43 विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया। इस शोध के निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के संस्कृत विषय के विद्यार्थी रचनावादी शिक्षण उपागम के प्रति धनात्मक प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त करते हैं।

### शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध एवं शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ के रूप में यह कहा जा सकता है कि यदि माध्यमिक स्तर पर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के रूप में रचनावादी उपागम को अपनाया जाता है तो इससे निश्चित रूप से अधिगम प्रतिफल प्रभावित होता है तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन में भी बेहतर परिणाम देखने को मिलता है। ऐसा करने से कक्षा में लोकतांत्रिक माहौल बना रहता है तथा सभी शिक्षार्थियों की सक्रिय सहभागिता भी बनी रहती है। विभिन्न क्रियाओं के रूप में कक्षा का वातावरण सदैव परिवर्तनशील एवं गतिशील रहता है, जिससे शिक्षा आनंददायक और रुचिपूर्ण हो जाती है। अतः प्रत्येक शिक्षक के लिए यह अत्यंत उपयोगी हो जाता है कि वह शिक्षण की परंपरागत विधियों का परित्याग कर रचनावादी शिक्षण विधि के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे एक अभिन्न अंग के रूप में अपनाए।

### संदर्भ

- अक्कू, एच., एच. कड़ाईप्की, बी. अतासोय, और गोबन, ओ. 2003. इफेक्टिवनेस ऑफ़ इंस्ट्रक्शन बेस्ड कन्स्ट्रक्टिविस्ट अप्रोच ऑन अंडरस्टैंडिंग केमिकल इक्विलिब्रियम कॉन्सेप्ट्स. *रिसर्च इन साइंस एण्ड टेक्नोलॉजिकल एजुकेशन*. 21 (2), 209–227. [https://www.researchgate.net/publication/306359589\\_REVIEW\\_OF\\_RESEARCHES\\_ON\\_CONSTRUCTIVIST\\_APPROACH](https://www.researchgate.net/publication/306359589_REVIEW_OF_RESEARCHES_ON_CONSTRUCTIVIST_APPROACH) पर देखा गया।
- अब्दुल्हय, एच. 2015. पैनोरमा ऑफ़ कन्स्ट्रक्टिविज़्म इन लैंग्वेज एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ पेडागॉजी इन्नोवेशन एण्ड न्यू टेक्नोलॉजीज़*. 2, (2). [https://www.researchgate.net/publication/288039053\\_Panorama\\_of\\_Constructivism\\_in\\_Language\\_Education](https://www.researchgate.net/publication/288039053_Panorama_of_Constructivism_in_Language_Education) पर देखा गया।
- कॉफ़मैन, डी. 2004. कन्स्ट्रक्टिविस्ट इशूज़ इन लैंग्वेज लर्निंग एण्ड टीचिंग. *एन्नुअल रिव्यू ऑफ़ अप्लाईड लिंग्विस्टिक्स जर्नल*. 24 (14). <https://www.cambridge.org/core/journals/annual-review-of-applied-linguistics/article/14-constructivist-issues-in-language-learning-and-teaching/5F5E9E6F8FC35E875410CF05C65258FB> पर देखा गया।

- कैन, टी. 2009. लर्निंग एण्ड टीचिंग लैंग्वेज ऑनलाइन— ए कन्स्ट्रक्टिविस्ट अप्रोच. *नोविटॉस रॉयल, रिसर्च ऑन यूथ एण्ड लैंग्वेज*. 3, (1), 60–74. <https://pdfs.semanticscholar.org/c54a/4f70975d22c3f181695774ace912c5160920.pdf> पर देखा गया।
- नॉमनियन, एस. 2018. कन्स्ट्रक्टिविज्म— थिअरी एण्ड इट्स एप्लीकेशन टू लैंग्वेज टीचिंग. माहीडोल यूनिवर्सिटी, कंचनाबुरी, थाईलैण्ड. <http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.553.6134&rep=rep1&type=pdf> पर देखा गया।
- पूनम. 2018. इफेक्ट ऑफ़ कन्स्ट्रक्टिविस्ट इंस्ट्रक्शनल मॉडल ऑन अचीवमेंट एण्ड रिटेंशन ऑफ़ हाईस्कूल स्टूडेंट्स इन इंग्लिश (पब्लिकेशन न. 299374) पी-एच. डी. थिसिस, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी, हरियाणा. शोधगंगा. <http://hdl.handle.net/10603/29937> पर देखा गया।
- बुरोबेस, पी. ए. 2003. अ स्टूडेंट सेंटर्ड अप्रोच टू टीचिंग जनरल बायोलॉजी दैट रीयली वर्ड्स— लॉर्ड्स कन्स्ट्रक्टिविस्ट मॉडल पट टू ए टेस्ट. *द अमेरिकन बायोलॉजी टीचर*. 65 (7), 491–494. [https://www.researchgate.net/publication/306359589\\_REVIEW\\_OF\\_RESEARCHES\\_ON\\_CONSTRUCTIVIST\\_APPROACH](https://www.researchgate.net/publication/306359589_REVIEW_OF_RESEARCHES_ON_CONSTRUCTIVIST_APPROACH) पर देखा गया।